==========

AVYAKT MURLI

09 / 11 / 72

==========

09-11-72 ओम शान्ति अव्यक्त बापदादा मधुबन

ज्ञान-सितारों का सम्बन्ध ज्ञान-सूर्य और ज्ञान-चन्द्रमा के साथ

स्मृतिस्वरूप स्पष्ट सितारे सदैव अपने को दिव्य सितारा समझते हो? वर्तमान समय का श्रेष्ठ भाग्य बापदादा के नैनों के सितारे और भविष्य जो प्राप्त होने वाली तकदीर बना रहे हो, उन श्रेष्ठ तकदीर के सितारे अपने को देखते हुए चलते हो? जब अपने को दिव्य सितारा नहीं समझते हो तो यह दोनों सितारे भी स्मृति में नहीं रहते। तो अपने त्रिमूर्ति सितारा रूप को सदैव स्मृति में रखो। जैसे सितारों का सम्बन्ध चन्द्रमा और सूर्य के साथ है। गुप्त रूप में सूर्य के साथ रहता है और प्रत्यक्ष रूप में चन्द्रमा के साथ रहता है। आप चैतन्य सितारों का सम्बन्ध भी प्रैक्टिकल रूप में किसके साथ रहा? चन्द्रमा के साथ रहा ना। ज्ञानसूर्य तो गुप्त ही है। लेकिन साकार रूप में प्रसिद्ध रूप में तो बड़ी मां ही के साथ संबंध रहा ना। तो अपने को सितारा समझते रहना है। जैसे सितारों का सम्बन्ध चन्द्रमा और सूर्य के साथ रहता है, ऐसे सदा बापदादा के साथ ही सम्बन्ध रहे। जैसे सितारे चमकते हैं वैसे ही अपने चमकते हुए ज्योति-स्वरूप में सदैव स्थित रहना है। सितारे आपस में संगठन में रहते सदा एक दो के स्नेही और सहयोगी रहेंगे। आप चैतन्य सितारों की यादगार यह सितारे हैं। तो ऐसे श्रेष्ठ सितारे बने हो? चैतन्य और चित्र समान हुए हैं? अपने भिन्न-भिन्न रूप के भिन्न-भिन्न कर्त्तव्य के यादगार चित्र देखते, समझते हो कि यह मुझ चैतन्य का ही चित्र है? चैतन्य और चित्र

में अंतर समाप्त हो गया है वा अजुन समीप आ रहे हो? सितारे कब आपस में संगठन में रहते एक दो के स्नेह और सहयोग से दूर रहते हैं क्या? आप लोगों ने कब सम्मेलन नहीं किया है? संदेश देने के सम्मेलन तो बहुत किये हैं। बाकी कौनसा सम्मेलन रहा हुआ है? जो अंतिम सम्मेलन है उसका उद्देश्य क्या है? सम्मेलन के पहले उद्देश्य सभी को सुनाते हो ना। तो अंतिम सम्मेलन का उद्देश्य सभी को सुनाते हो ना। तो अंतिम सम्मेलन का उद्देश्य क्या है? उसकी डेट फिक्स की है? जैसे और सम्मेलन की डेट फिक्स करते हो ना, यह फिक्स की है? वह सम्मेलन तो सभी को मिल कर करना है। आपके उस अंतिम सम्मेलन का चित्र है। जो चित्र है उसको ही प्रैक्टिकल में लाना है। सभी का सहयोग, सभी का स्नेह और सभी का एकरस स्थिति में स्थित रहने का चित्र भी है ना। जैसे गोवर्धन पर्वत पर अंगुली दिखाते हैं, तो अंगुली को बिल्कुल सीधा दिखायेंगे। अगर टेढ़ी-बांकी होगी तो हिलती रहेगी। सीधा और स्थित, उसकी निशानी इस रूप में दिखाई है। ऐसे ही अपने पुरूषार्थ को भी बिल्कुल ही सीधा रखना है। बीच-बीच में जो टेढ़ा-बांका रास्ता हो जाता है अर्थात् बुद्धि यहां-वहां भटक जाती है, वह समाप्त हो एकरस स्थिति में स्थित हो जाना है। ऐसा पुरूषार्थ कर रहे हो? लेकिन अपने पुरूषार्थ से स्वयं संतुष्ट हो? वा जैसे भक्तों को कहते हो कि चाहना श्रेष्ठ है लेकिन शक्तिहीन होने कारण जो चाहते हैं वह कर नहीं पाते हैं, ऐसे ही आप भी जो चाहते हो कि ऐसे श्रेष्ठ बनें, चाहना श्रेष्ठ और पुरूषार्थ कम, लक्ष्य अपने सन्तुष्टता के आधार से दूर दिखाई दे तो उसको क्या कहा जावेगा? महान ज्ञानी? अपने को सर्व- शक्तिवान् की सन्तान कहते हो लेकिन सन्तान होने के बाद भी अपने में शक्ति नहीं है? मनुष्य जो चाहे सो कर सकता है, ऐसे समझते हो ना? तो आप भी मास्टर सर्व-शक्तिवान् के नाते जो आप 3 वर्ष की बात सोचते हो वह अभी नहीं कर सकते हो? अपनी वह अंतिम स्टेज अभी प्रैक्टिकल में नहीं ला सकते हो? कि अंतिम है इसलिये अंत में हो जावेगी? यह कब भी नहीं समझना कि अंतिम स्टेज का अर्थ यह है कि वह स्टेज अंत में ही आवेगी। लेकिन अभी से उस सम्पूर्ण स्टेज को जब प्रैक्टिकल में लाते जावेंगे तब अंतिम स्टेज को अंत में पा सकेंगे। अगर अभी से उस स्टेज को समीप नहीं लाते रहेंगे तो दूर ही रह जावेंगे, पा न सकेंगे। इसलिये अब पुरूषार्थ में जम्प लगाओ। चलते- चलते पुरूषार्थ की परसेन्टेज

में कमी पड़ जाती है। इसलिये आप पुरूषार्थ की स्टेज पर हो लेकिन स्टेज पर होते भी परसेन्टेज को भरो। परसेन्टेज में बहुत कमी है। जैसे मुख्य सब्जेक्ट 'याद की यात्रा' जो है वह नंबरवार बना भी चुके हो लेकिन स्टेज के साथ जो परसेन्टेज होनी चाहिए वह अब कम है। इसलिये जो प्रभाव दिखाई देना चाहिए, वह कम दिखता है। जब तक परसेन्टेज नहीं बढ़ाई है तब तक प्रभाव फैल नहीं सकता है। फैलाव के लिये परसेन्टेज चाहिए। जैसे बल्ब होते हैं, लाइट तो सभी में होती है लेकिन जितनी लाइट की परसेन्टेज होगी इतनी जास्ती फैलेगी। तो बल्ब बने हो लेकिन लाइट की जो परसेन्टेज होनी चाहिए, वह अभी नहीं है, उसको बढ़ाओ। सुनाया था ना - एक है लाइट, दूसरी है सर्चलाइट, तीसरा है लाइट-हाऊस। भिन्न स्टेजेस हैं ना। लाइट तो बने हो लेकिन लाइट-हाऊस हो चारों ओर अंधकार को दूर कर लाइट फैलाओ। सभी को इतनी रोशनी प्राप्त कराओ जो वह अपने आपको देख सकें। अभी तो अपने आपको भी देख नहीं सकते। जैसे बहुत अंधकार होता है तो न अपने को, न दूसरे को देख सकते हैं। तो ऐसे लाइट-हाऊस बनो जो सभी अपने आपको तो देख सकें। जैसे दर्पण के आगे जो भी होता है उसको स्वयं का साक्षात्कार होता है। ऐसे दर्पण बने हो? अगर इतने सभी दर्पण बन अपना कर्त्तव्य करने शुरू कर दें तो क्या चारों ओर सर्वात्माओं को स्वयं का साक्षात्कार नहीं हो जावेगा? जब किसको साक्षात्कार हो जाता है तो उनके मुख से जय-जय का नारा ज़रूर निकलता है। ऐसे दर्पण तो बने हो ना? सारे दिन में कितनों को स्वयं का साक्षात्कार कराते हो? जो सामने आता है वह साक्षात्कार करता है? अगर दर्पण पावरफुल न हो तो रीयल रूप के बजाय और रूप दिखाई देता है। होगा पतला, दिखाई पड़ेगा मोटा। तो ऐसे पावरफुल दर्पण बनो जो सभी को स्वयं का साक्षात्कार करा सको अर्थात् आप लोगों के सामने आते ही देह को भूल अपने देही रूप में स्थित हो जायें। वास्तविक सर्विस अथवा सर्विस की सफलता का रूप यह है। अच्छा!

सदा सफलतामूर्त, संस्कारों के मिलन का सम्मेलन करने वाले, अपने सम्पूर्ण स्थिति को समीप लाने वाले दिव्य सितारों को, बापदादा के नैनों के सितारों को, तकदीर के सितारे को जगाने वालों को याद-प्यार और नमस्ते।

==========

QUIZ QUESTIONS

==========

प्रश्न 1 :- लाइट तो बने गये, लेकिन अब बापदादा की बच्चों के प्रति कौन-सी आशा है?

प्रश्न 2 :- अगर इतने सभी दर्पण बन अपना कर्त्तव्य करने शुरू कर दें, तो क्या प्रभाव होगा? पॉवरफुल और रीयल दर्पण की निशानी क्या होगी?

प्रश्न 3 :- अपने किस त्रिमूर्ति सितारा रूप को सदैव स्मृति में रखना है? स्वयं को चैतन्य सितारे समझते हुए क्या चेकिंग करनी है?

प्रश्न 4 :- संदेश देने के सम्मेलन तो बहुत किये हैं; बाकी कौन-सा सम्मेलन रहा हुआ है?

प्रश्न 5 :- अपने पुरुषार्थ की क्या जाँच करनी है?

FILL IN THE BLANKS:-

(सब्जेक्ट, जम्प, सम्पूर्ण, लाइट, बल्ब, नंबरवार, परसेन्टेज, प्रैक्टिकल, सर्चलाइट, अभी, स्टेज, कमी, अंतिम, लाइटहाऊस, बढ़ाओ)

1 _____ बने हो, लेकिन लाइट की जो परसेन्टेज होनी चाहिए, वह _____ नहीं है, उसको _____।

2 एक है _____, दूसरी है _____, तीसरा है _____। भिन्न स्टेजेस हैं ना।

3 अभी से उस _____ स्टेज को जब _____ में लाते जावेंगे, तब _____ स्टेज को अंत में पा सकेंगे।

4 अब पुरूषार्थ में _____ लगाओ। चलते- चलते पुरूषार्थ की _____ में _____ पड़ जाती है।

5 जैसे मुख्य _____ 'याद की यात्रा' जो है, वह _____ बना भी चुके हो, लेकिन _____ के साथ जो परसेन्टेज होनी चाहिए, वह अब कम है।

सही-गलत वाक्यों को चिह्नित करें:-

1 :- यह समझना कि अंतिम स्टेज का अर्थ यह है कि वह स्टेज अंत में ही आवेगी।

2 :- अगर अभी से उस स्टेज को समीप लाते रहेंगे, तो दूर ही रह जावेंगे, पा न सकेंगे।

3 :- आप पुरूषार्थ की स्टेज पर हो, लेकिन परसेन्टेज होते भी स्टेज को भरो।

4 :- परसेन्टेज में बहुत कमी है। फैलाव के लिये परसेन्टेज चाहिए।

5 :- जब तक परसेन्टेज नहीं बढ़ाई है, तब तक मनमुटाव फैल नहीं सकता है।

==========

QUIZ ANSWERS

==========

प्रश्न 1 :- लाइट तो बने गये, लेकिन अब बापदादा की बच्चों के प्रति कौन-सी आशा है?

उत्तर 1 :-बाबा ने समझाया कि लाइट तो बने हो, लेकिन लाइट-हाऊस हो चारों ओर अंधकार को दूर कर लाइट फैलाओ। सभी को इतनी रोशनी प्राप्त कराओ, जो वह अपने आपको देख सकें। अभी तो अपने आपको भी देख नहीं सकते। जैसे बहुत अंधकार होता है, तो न अपने को, न दूसरे को देख सकते हैं। तो ऐसे लाइट-हाऊस बनो, जो सभी अपने आपको तो देख सकें।

प्रश्न 2 :- अगर इतने सभी दर्पण बन अपना कर्त्तव्य करने शुरू कर दें, तो क्या प्रभाव होगा? पॉवरफुल और रीयल दर्पण की निशानी क्या होगी?

उत्तर 2 :-बाबा ने दर्पण के उदाहरण के माध्यम से स्पष्ट किया कि जैसे दर्पण के आगे जो भी होता है उसको स्वयं का साक्षात्कार होता है। ऐसे अगर इतने सभी (बच्चे) दर्पण बन अपना कर्त्तव्य करने शुरू कर दें, तो:

1. चारों ओर सर्वात्माओं को स्वयं का साक्षात्कार हो जावेगा।

2. सबके मुख से जय-जय का नारा ज़रूर निकलता है। पॉवरफुल और रीयल दर्पण की निशानी होगी कि वह साक्षात्कारमूर्त्त बन कर सारे दिन में सर्व को स्वयं का साक्षात्कार कराते रहेंगे। चेक करना है कि जो सामने आता है, वह साक्षात्कार करता है!

❶ अगर दर्पण पावरफुल न हो, तो रीयल रूप के बजाय और रूप दिखाई देता है। होगा पतला, दिखाई पड़ेगा मोटा। तो ऐसे पावरफुल दर्पण बनो, जो सभी को स्वयं का साक्षात्कार करा सको अर्थात् आप लोगों के सामने आते ही देह को भूल अपने देही रूप में स्थित हो जायें।

❷ वास्तविक सर्विस अथवा सर्विस की सफलता का रूप यह है।

प्रश्न 3 :- अपने किस त्रिमूर्ति सितारा रूप को सदैव स्मृति में रखना है? स्वयं को चैतन्य सितारे समझते हुए क्या चेकिंग करनी है?

उत्तर 3 :-बाबा ने समझाया कि सदैव अपने स्मृतिस्वरूप स्पष्ट दिव्य सितारा स्वरूप, वर्तमान समय का श्रेष्ठ भाग्य बापदादा के नैनों के सितारे और भविष्य जो प्राप्त होने वाली तकदीर बना रहे हो, उन श्रेष्ठ तकदीर के सितारे अपने को देखते हुए चलना है। जब अपने को दिव्य सितारा नहीं समझते हो, तो यह दोनों सितारे भी स्मृति में नहीं रहते। आप चैतन्य सितारों की यादगार यह सितारे हैं।

❶ जैसे सितारों का सम्बन्ध चन्द्रमा और सूर्य के साथ है; गुप्त रूप में सूर्य के साथ रहता है और प्रत्यक्ष रूप में चन्द्रमा के साथ रहता है, ऐसे आप चैतन्य सितारों का सम्बन्ध भी सदा बापदादा के साथ ही रहे।

❷ जैसे सितारे चमकते हैं, वैसे ही अपने चमकते हुए ज्योति-स्वरूप में सदैव स्थित रहना है।

❸ सितारे आपस में संगठन में रहते सदा एक-दो के स्नेही और सहयोगी रहेंगे। स्वयं को चैतन्य सितारे समझते हुए अपनी चेकिंग करनी है कि:

❶ क्या हम ऐसे श्रेष्ठ सितारे बने हैं?

❷ चैतन्य और चित्र समान हुए हैं?

❸ अपने भिन्न-भिन्न रूप के, भिन्न-भिन्न कर्त्तव्य के यादगार चित्र देखते, यह समझते हैं कि यह मुझ चैतन्य का ही चित्र है?

❹ चैतन्य और चित्र में अंतर समाप्त हो गया है वा अजुन समीप आ रहे हो?

❺ सितारे कब आपस में संगठन में रहते एक-दो के स्नेह और सहयोग से दूर रहते हैं क्या?

प्रश्न 4 :- संदेश देने के सम्मेलन तो बहुत किये हैं; बाकी कौन-सा सम्मेलन रहा हुआ है?

उत्तर 4 :-बाबा ने समझाया कि संदेश देने के सम्मेलन तो बहुत किये हैं; बाकी जो अंतिम सम्मेलन है, वह रहा हुआ है। वह सम्मेलन तो सभी को मिल कर करना है।

❶ आपके उस अंतिम सम्मेलन का जो चित्र है, उसको ही प्रैक्टिकल में लाना है। सभी का सहयोग, सभी का स्नेह और सभी का एकरस स्थिति में स्थित रहने का चित्र भी है ना।

❷ जैसे गोवर्धन पर्वत पर अंगुली दिखाते हैं, तो अंगुली को बिल्कुल सीधा दिखायेंगे। अगर टेढ़ी-बांकी होगी, तो हिलती रहेगी। सीधा और स्थित, उसकी निशानी इस रूप में दिखाई है। ऐसे ही अपने पुरूषार्थ को भी बिल्कुल ही सीधा रखना है। बीच-बीच में जो टेढ़ा-बांका रास्ता हो जाता है अर्थात् बुद्धि यहां-वहां भटक जाती है, वह समाप्त हो एकरस स्थिति में स्थित हो जाना है।

❸ अंतिम सम्मेलन का उद्देश्य सभी को सुनाना है और उसकी डेट भी फिक्स करनी है।

प्रश्न 5 :- अपने पुरुषार्थ की क्या जाँच करनी है?

उत्तर 5 :-अपने पुरूषार्थ की जाँच करनी है कि:

1. क्या हम अपने पुरूषार्थ से स्वयं संतुष्ट हैं?

2. क्या चाहना श्रेष्ठ है, लेकिन शक्तिहीन होने कारण, जो चाहते हैं वह कर नहीं पाते हैं?

3. चाहना श्रेष्ठ और पुरूषार्थ कम तथा लक्ष्य अपने सन्तुष्टता के आधार से दूर तो दिखाई नहीं देता है?

4. अपने को सर्व-शक्तिवान् की सन्तान कहते हुए भी अपने में शक्ति नहीं है– ऐसा तो नहीं समझते हैं?

5. मनुष्य जो चाहे, सो कर सकता है, ऐसे क्या हम भी मास्टर सर्व-शक्तिवान् के नाते जो (3 वर्ष की) बात सोचते हैं, वह अभी नहीं कर सकते हैं?

6. अपनी वह अंतिम स्टेज अभी प्रैक्टिकल में नहीं ला सकते हैं?

FILL IN THE BLANKS:-

(सब्जेक्ट, जम्प, सम्पूर्ण, लाइट, बल्ब, नंबरवार, परसेन्टेज, प्रैक्टिकल, सर्चलाइट, अभी, स्टेज, कमी, अंतिम, लाइटहाऊस, बढ़ाओ)

1 _____ बने हो, लेकिन लाइट की जो परसेन्टेज होनी चाहिए, वह _____ नहीं है, उसको _____।

बल्ब / अभी / बढ़ाओ

2 एक है _____, दूसरी है _____, तीसरा है _____। भिन्न स्टेजेस हैं ना।

लाइट / सर्चलाइट / लाइटहाऊस

3 अभी से उस _____ स्टेज को जब _____ में लाते जावेंगे, तब _____ स्टेज को अंत में पा सकेंगे।

सम्पूर्ण / प्रैक्टिकल / अंतिम

4 अब पुरूषार्थ में _____ लगाओ। चलते- चलते पुरूषार्थ की _____ में _____ पड़ जाती है।

जम्प / परसेन्टेज / कमी

5 जैसे मुख्य _____ 'याद की यात्रा' जो है, वह _____ बना भी चुके हो, लेकिन _____ के साथ जो परसेन्टेज होनी चाहिए, वह अब कम है।

सब्जेक्ट / नंबरवार / स्टेज

सही-गलत वाक्यों को चिह्नित करें:-【✔】【✖】

1 :- यह समझना कि अंतिम स्टेज का अर्थ यह है कि वह स्टेज अंत में ही आवेगी।【✖】

यह कब भी नहीं समझना कि अंतिम स्टेज का अर्थ यह है कि वह स्टेज अंत में ही आवेगी।

2 :- अगर अभी से उस स्टेज को समीप लाते रहेंगे, तो दूर ही रह जावेंगे, पा न सकेंगे।【✖】

अगर अभी से उस स्टेज को समीप नहीं लाते रहेंगे, तो दूर ही रह जावेंगे, पा न सकेंगे।

3 :- आप पुरूषार्थ की स्टेज पर हो, लेकिन परसेन्टेज होते भी स्टेज को भरो।【✖】

आप पुरूषार्थ की स्टेज पर हो, लेकिन स्टेज पर होते भी परसेन्टेज को भरो।

4 :- परसेन्टेज में बहु तकमी है। फैलाव के लिये परसेन्टेज चाहिए।【✔】

5 :- जब तक परसेन्टेज नहीं बढ़ाई है, तब तक मनमुटाव फैल नहीं सकता है।【✖】

जब तक परसेन्टेज नहीं बढ़ाई है, तब तक प्रभाव फैल नहीं सकता है।